International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
Received: 29-12-2020; Accepted: 18-01-2021; Published: 06-02-2021
www.educationjournal.in
Volume 6; Issue 1; 2021; Page No. 61-63

बरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों पर विद्यालय के सामाजिक एवं संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

दीन दयाल[1], डां. प्रतिभा रस्तोगी[2], डां. प्रियंका वर्मा[2]

[1] शिक्षा विभाग, ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेण्ट सांइस एण्ड टेक्नोलॉजी बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेण्ट सांइस एण्ड टेक्नोलॉजी बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत लघु शोध 'बरेली जनपद के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों पर विद्यालय के सामाजिक एवं संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन' विषय पर किया गया है इसमें सर्वेक्षण विधि द्वारा आंकड़ों का संकलन किया गया तथा सोद्देश्य न्यादर्श चयन विधि द्वारा 10 विद्यालयों तथा 100 विद्यार्थियों को याद्दृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा चयनित किया गया। शोध कार्य के लिए डा0 रेणुका कुमारी सिन्हा एवं श्रीमती रजनी भार्गव द्वारा निर्मित एवं मानवीकृत 'Socio Emotional School Climate Innevtory (SESCI) सूची का प्रयोग किया गया। इस कार्य में आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा टी0 परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस शोध का निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि यू0पी0 बोर्ड तथा सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों पर विद्यालय के सामाजिक एवं संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मूल शब्दः विद्यालय के सामाजिक एवं संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति के जीवन को आकार देने में महत्पूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा हमारे ज्ञान के स्तर, कौशल और तकनीकी को बढ़ाने का कार्य करती है, जीवन के कठिन समय में चुनौतियों का सामना करने का पाठ सिखाने में मदद करती है। शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक शक्तियों का विकास होता है। व्यक्ति की भॉति समाज भी शिक्षा के चमत्कार से लाभान्वित होता है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक सम्पत्ति को इस प्रकार से हस्तान्तरित करता है कि उनके हृदय में देश–प्रेम तथा त्याग की भावना जाग्रत हो जाती है। पेस्टालॉजी के अनुसार, ''शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वभाविक, समरूप तथा प्रगतिशील विकास है।'' बॉसिंग के शब्दों में, ''शिक्षा का कार्य व्यक्ति को वातावरण के साथ उस सीमा तक अनुकूलन करना है जिससे व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए स्थायी सन्तोष प्राप्त हो सके।

इस प्रकार शिक्षा एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में स्कूली शिक्षा का क अहम रोल होता है। स्कूली शिक्षा को तीन भागों में बॉटा गया है प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा। प्राथमिक शिक्षा जीवन रूपी इमारत की नींव का कार्य करती है जबकि उच्च शिक्षा के लिए आधार का कार्य करती है। माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा के बीच कड़ी का कार्य करती है। प्रो0 हुमॉयु कबीर के अनुसार, ''माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा की एक ऐसी कड़ी है जो माध्यमिक और उच्च शिक्षा को दृढ़ता के साथ एक कड़ी में बांधती है।''

बालक के व्यक्तित्व के विकास में शिक्षा ही नहीं बल्कि उसका वातावरण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वातावरण से हमारा आशय किसी वस्तु की उन दशाओं से है जो बाहर से घेरे रहती है और उस पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है तथा उसका पूर्ण विकास भी उसी पर निर्भर होता है। मनुष्य के विकास में प्राकृतिक वातावरण के साथ उसके सामाजिक वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामाजिकता सिखाने में विद्यालय के सामाजिक वातावरण का बच्चे पर अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव पड़ता है। विद्यालय के सामाजिक वातावरण द्वारा विद्यार्थी की अनुवांशिक विशेषताओं को संशोधित, परिवर्तित और परिष्कृत किया जा सकता है। विद्यार्थी की योग्यता और क्षमता कैसी भी हो विद्यालय का सामाजिक वातावरण जैसा होगा विद्यार्थी के व्यक्तित्व का विकास भी उसी के अनुरूप होगा। विद्यालय का अच्छा वातावरण विद्यार्थी के लिए सीखने की अनुकूल स्थितियॉ उपलब्ध कराता है।

विद्यालय का वातावरण जहॉ एक ओर विद्यार्थी को शिक्षा देता है, सामाजिकता का पाठ पढ़ाता है वहीं दूसरी ओर विभिन्न संवेगों को परिष्कृत करने का कार्य करता है। संवेग एक भावात्मक स्थिति है। व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं सामाजिक विकास में संवेगों का योगदान होता है। वुडवर्थ के अनुसार, ''प्रत्येक संवेग एक अनुभूति होता है तथा प्रत्येक संवेग उसी समय एक गत्यात्मक तत्परता होता है।'' लगातार संवेगात्मक असन्तुलन विद्यार्थी के वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करता है तथा अनेक प्रकार की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक समस्याओं को उत्पन्न करता है। इसलिए विद्यालय का संवेगात्मक वातावरण स्वस्थ एवं अच्छा होना चाहिए जिससे विद्वार्थी अपनी कुंठाओं से मुक्त होकर अपने व्यक्तित्व और चरित्र का विकास कर सके। विद्यालय का संगठनात्मक तंत्र इस ढंग से सुव्यवस्थित होना चाहिए कि छात्र–छात्राओं में स्वानुशासन की प्रवृत्ति सहज रूप से विकसित हो।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

यह कहना न्यायसंगत होगा कि विद्यार्थी के जीवन में विद्यालय का सामाजिक एवं संवेगात्मक वातावरण अधिक प्रभाव डालता है। वर्तमान समय में विज्ञान और तकनीकी विकास तथा जीवन की जटिलता ने मानव को तनावग्रस्त बना दिया है। बालक का समाज से सम्बन्ध टूटता जा रहा है। बच्चों के व्यक्तित्व में संवेगात्मक अस्थिरता दिखाई देती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि स्वतंत्र भारत की स्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए

शिक्षा का आयोजन इस प्रकार किया जाये जिससे यह एक ओर जहॉ देश के आर्थिक विकास में सहायक हो वहीं दूसरी ओर विद्यार्थियों में शाश्वत सामाजिक और संवेगात्मक मूल्यों का भी विकास करे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में इस बात पर गहरी चिन्ता प्रकट की गई है। शिक्षा क्रम में ऐसे परिवर्तन की जरूरत है जिसमें सामाजिक और संवेगात्मक मूल्यों के विकास में शिक्षा एक सशक्त साधन बन सके।

हयूजेस, विलियम, एच और पिकरेंल टेटी0 (2013) ने अपने शोध कार्य में पाया कि एक सकारात्मक स्कूल वातावरण छात्रों की उपलब्धि और संबन्धित की भावना में सुधार करती है।

अनुराग (2010) ने अपने सामाजिक और संवेगात्मक वातावरणीय अध्ययन में पया कि अधिकांश छात्र सामाजिक वातावरण से सामंजस्य बिठाने में सफल हुए। अधिकांश छात्र संवेगात्मक वातावरण पर अपना नियंत्रण नहीं रख पाये। अधिकांश छात्रों को सामाजिक एवं संवेगात्मक वातावरण में मदद करने वाला माहौल नहीं मिला। चौधरी के0के0 (2000) ने इक्कीसवीं शताब्दी में सामाजिक एवं संवेगात्मक वातावरण के विषय का अध्ययन किया। इस अध्ययन में माध्यमिक स्तर को मूल्यों की शिक्षा एवं सामाजिक तथा संवेगात्मक वातावरण हेतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया। विभिन्न शिक्षाविदों के अध्ययनों के निष्कर्षों से सार्थक परिणाम सामने आए है फिर भी विशेष क्षेत्र का सर्वेक्षण करने से क्या भिन्न परिणाम हो सकता है यह जानने के लिए शोध का विषय बरेली जनपद में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों पर विद्यालय के सामाजिक एवं संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन'' रखा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों पर विद्यालय के सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के माध्यमिक स्तर पर अध्ययरनत विद्यार्थियों के संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों पर विद्यालय के सामाजिक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों पर विद्यालय के संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुसंधान क्रिया–विधि

प्रस्तुत लघु शोध में ऑकड़ों का संकलन सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश राज्य के बरेली जिले के यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड द्वारा संचालित समस्त माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के कक्षा 9–10 में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थी जनसंख्या के अंतर्गत सम्मिलित किए गए हैं।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु बरेली जनपद के माध्यमिक स्तर के यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड द्वारा संचालित विद्यालयों में से सोद्देश्य न्यादर्श चयन विधि द्वारा 10 विद्यालय (5 यू0पी0 बोर्ड एवं 5 सी0बी0एस0ई0 बोर्ड) के 100 विद्यार्थियों (50 यू0पी0 बोर्ड एवं 50 सी0बी0एस0ई0 बोर्ड) को यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा चयन किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु विद्यालय के सामाजिक एवं संवेगात्मक वातावरण के मापन के लिए डा0 रेणुका कुमारी सिन्हा एवं श्रीमती रजनी भार्गव द्वारा निर्मित एवं मानवीकृत "Socio Emotional School Climate Inventory (SESCI) सूची का प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियॉ

प्रस्तुत शोध कार्य में आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी0 परीक्षण का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं विवेचन

प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्य, सम्बन्धित परिकल्पना एवं प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों एवं विवेचनाओं को निम्नवत क्रम में प्रस्तुत है–

तालिका 1: यू0पी0 बोर्ड एवं सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों पर विद्यालय के सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

बोर्ड	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी0 परीक्षण	परिणाम
यू0पी0 बोर्ड	50	29.42	3.53	2.06	स्वीकृत 0.01 सारर्थकता स्तर पर
सी0बी0एस0ई0 बोर्ड	50	30.70	2.63		

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 29.42, 30.70 है तथा उनके मानक विचलन का मान क्रमशः 3.53, 2.63 है तथा टी–मान 2.06 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थक स्तर के मान 2.63 से कम है अर्थात 0.01 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 के विद्यार्थियों में विद्यालय के सामाजिक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2: यू0पी0 बोर्ड एवं सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों पर विद्यालय के संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

बोर्ड	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी0 परीक्षण	परिणाम
यू0पी0 बोर्ड	50	29.86	4.14	1.22	स्वीकृत 0.01 सारर्थकता स्तर पर
सी0बी0एस0ई0 बोर्ड	50	30.70	2.70		

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों का मध्यमान 29.86, 30.70 है तथा उनके मानक विचलन का मान क्रमशः 4.14, 2.70 है तथा टी0 मान 1.22 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2. 63 से कम है अर्थात 0.01 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अतः कहा जा सकता है कि यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों में विद्यालय के संवेगात्मक वातावरण में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

1. यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों में विद्यालय के सामाजिक वातावरण के प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है दोनों ही बोर्ड के विद्यार्थियों पर विद्यालय का सामाजिक वातावरण समान प्रभाव डालता है। अतः प्रथम परिकल्पना पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती है।
2. यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों में समान रूप से संवेगात्मक विकास पर बल दिया जाता है तथा किसी भी प्रकार से पक्षपातपूर्ण व्यवहार नहीं किया जाता। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत यू0पी0 बोर्ड व सी0बी0एस0ई0 बोर्ड के विद्यार्थियों पर विद्यालय के संवेगात्मक प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः द्वितीय परिकल्पना पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. प्रस्तुत शोध कार्य विद्यालय के वातावरण को अनुकूल बनाने की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है क्योंकि विद्यालय के स्वस्थ सामाजिक व संवेगात्मक वातावरण से बालक का शारीरिक व मानसिक विकास उत्तम होता है।
2. बालक में सामाजिकता तथा संवेगात्मकता की भावना विकसित होने के साथ उसे सामाजिक रीति–रिवाज, परम्पराओं, मान्यताओं, विश्वासों तथा आदर्शों का ज्ञान प्राप्त होता है।
3. बालक तथा समुदाय की विभिन्न समस्याओं को समझने और उन्हें सुलझाने का ज्ञान प्राप्त होता है।
4. विद्यालय के स्वस्थ वातावरण में बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण रखना सिखाता है।
5. विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन में बालक में सामाजिक एवं संवेगात्मक गुण समान रूप से विकसित हो जाते हैं।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर0ए0 (1998) ''शैक्षिक अनुसंधान,'' आर0 लाल पब्लिकेशन, मेरठ।
2. लाल रमन बिहारी (2017–18) ''शिक्षा के सामाजिक एवं दार्शनिक आधार'' – आर0 लाल पब्लिकेशन, मेरठ।
3. शर्मा डा0 डी0एल0 (1996) ''शिक्षा एवं भारतीय समाज'' आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. अग्रवाल बी0बी0 (1998)– ''आधुनिक भारतीय शिक्षा विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
5. कपिल एच0के0 (2009) ''सांख्यिकी के मूल तत्व'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
6. पाण्डेय डा0 राम शकल (1989) ''भारतीय शिक्षा के विभिन्न आयाम'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
7. भटनागर, सुरेश एवं कुमार, मुनेन्द्र (2016) – ''समकालीन भारत और शिक्षा'' – आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. वर्मा (1972) ''माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापक व छात्र अन्तर पारस्परिक संबंध के सन्दर्भ में सामाजिक एवं संवेगात्मक वातावरण का अध्ययन'' पी0एच0डी0 दयाल बाग आगरा।